KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

इतिहास

भाग - 2

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 8

किसान ज़मींदार और राज्य

भाग - 1

Pritesh Joshi

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

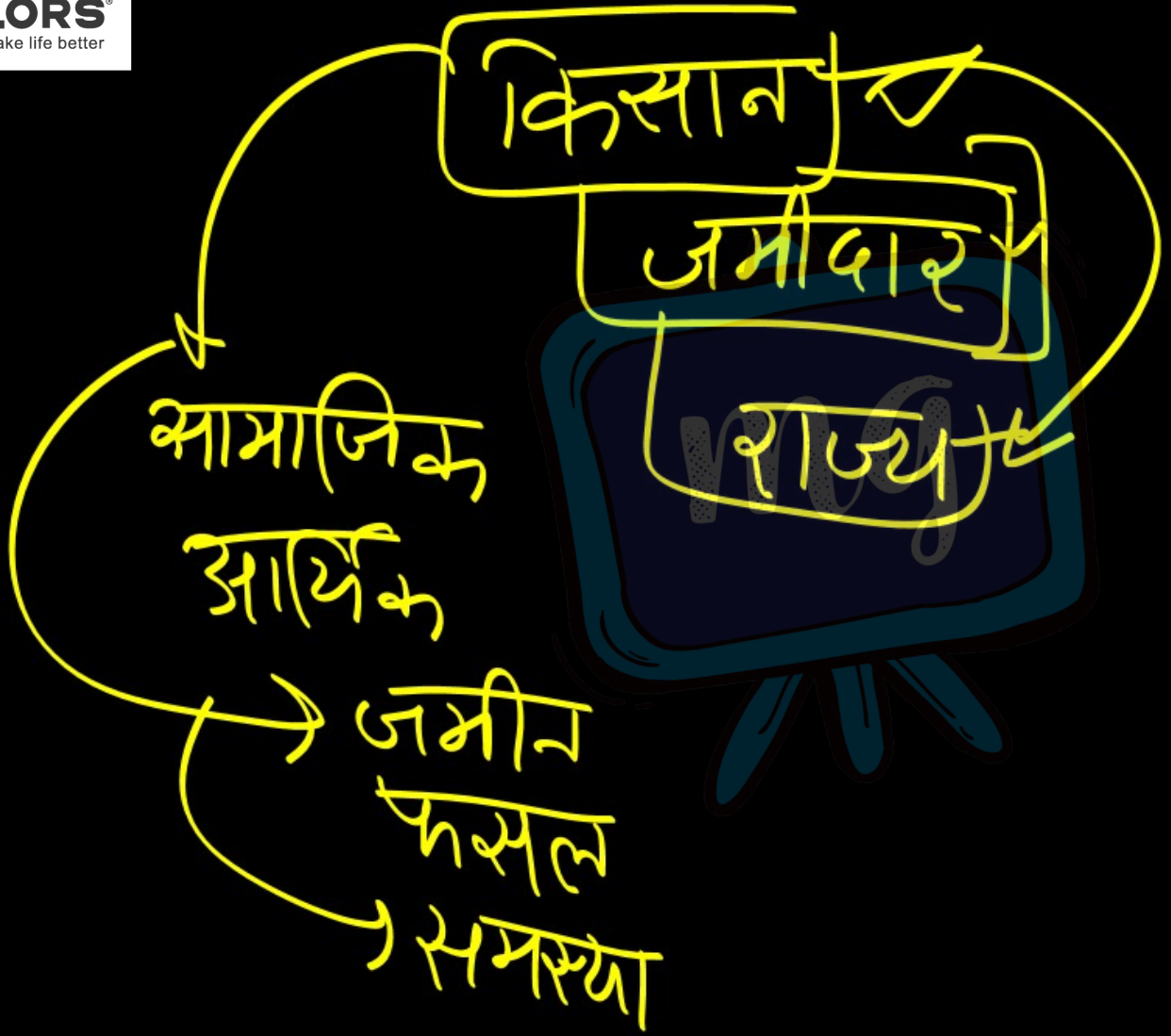

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कृषि समाज और मुग़ल साम्राज्य

- सोलहवीं–सत्रहवीं सदी के दौरान हिंदुस्तान में करीब-करीब 85 फ़ीसदी लोग गाँवों में रहते थे।
- छोटे खेतिहर और भूमिहर संभ्रांत दोनों ही कृषि उत्पादन से जुड़े थे और दोनों ही फ़सल के हिस्सों के दावेदार थे।
- इससे उनके बीच सहयोग, प्रतियोगिता और संघर्ष के रिश्ते बने।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ग्रामीण

3 + 1

- खेती से जुड़े इन तमाम रिश्तों के ताने-बाने से गाँव का समाज बनता था।
- इस ग्रामीण समुदाय के तीन घटक थे-
  1. खेतिहर किसान
  2. पंचायत
  3. गाँव का मुखिया (मुक़द्दम या मंडल)
- इसी समय कई बाहरी ताकतें भी ग्रामीण दुनिया में दाखिल हुईं। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण मुग़ल राज्य था जो अपनी आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा कृषि उत्पादन से उगाहता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- राज्य के नुमाइंदे – राजस्व निर्धारित करने वाले, राजस्व वसूली करने वाले, हिसाब रखने वाले – ग्रामीण समाज पर काबू रखने की कोशिश करते थे।
- वे तसल्ली करना चाहते थे कि खेतों की जुताई हो और राज्य को उपज से अपने हिस्से का कर समय पर मिल जाए।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

* कपास
* तम्बाकू

❖ चूँकि कई फ़सलें बिक्री के लिए उगाई जाती थीं, इसलिए व्यापार, मुद्रा और बाज़ार भी गाँवों में घुस आए और इससे खेती वाले इलाके शहर से जुड़ गए।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

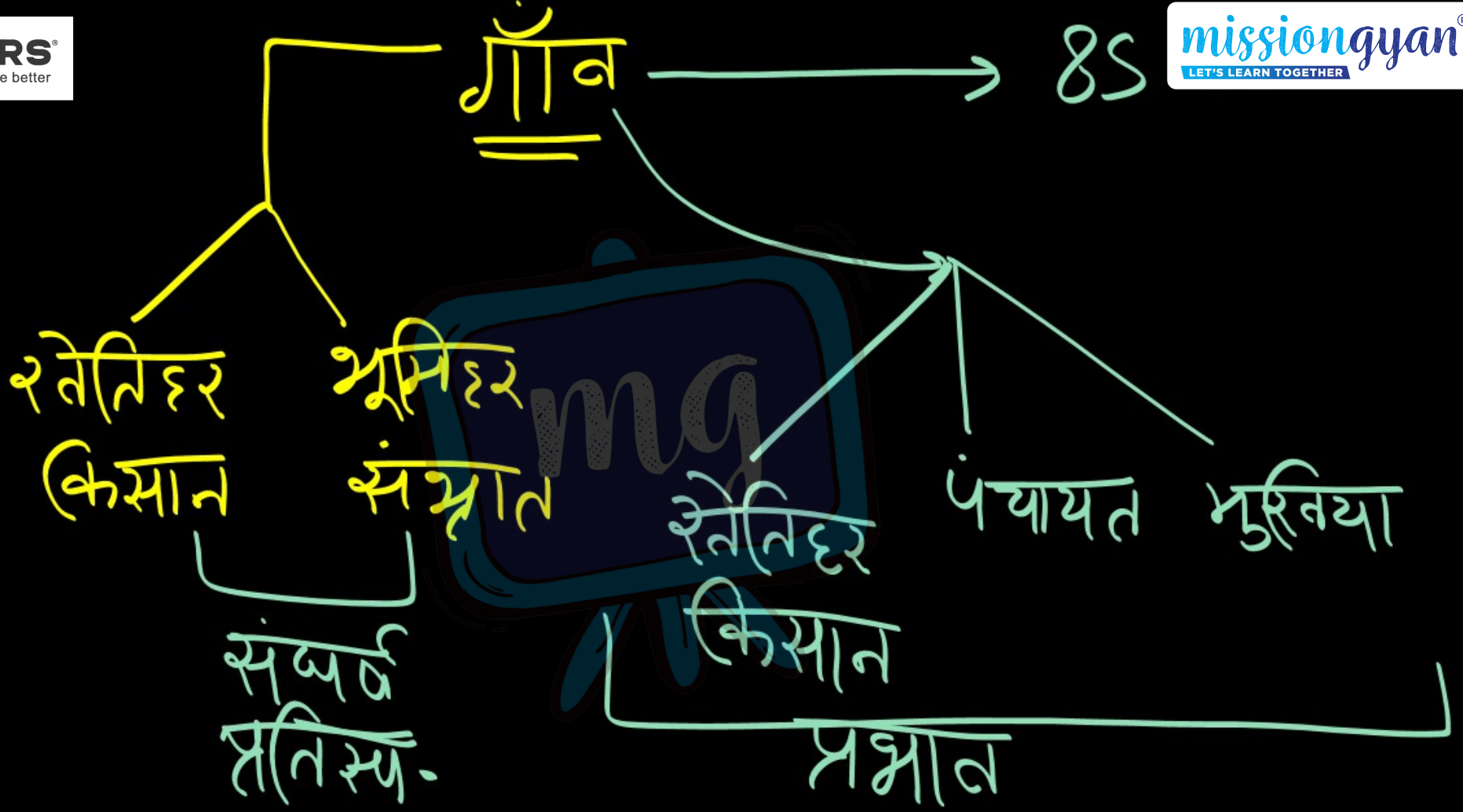

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मुगल साम्राज्य

अधिकारी

* कर निर्धारण।
* कर इकट्ठा।

कपास तम्बाकू

गाँव = शहर

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- किसान और कृषि उत्पादन
- सिचाई और तकनीक
- पंचायतें और मुखिया- जातिगत पंचायतें
- ग्रामीण दस्तकार
- कृषि समाज में महिलाएँ
- जंगल और कबीलें :- जंगलों में घुसपैठ
- जमींदार

KOLORS
make life better

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- भू-राजस्व प्रणाली
- चाँदी का बहाव
- स्त्रोत - अबुल फज्ल की आइन-ए-अकबरी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

फ़सल 2

किसान और कृषि उत्पादन

- खेतिहर समाज की बुनियादी इकाई गाँव थी जिसमें किसान रहते थे।
- किसान साल भर अलग-अलग मौसम में वो तमाम काम करते थे जिससे फ़सल की पैदावार होती थी - जैसे कि ज़मीन की जुताई, बीज बोना और फ़सल पकने पर उसकी कटाई।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके अलावा वे उन वस्तुओं के उत्पादन में भी शरीक़ होते थे जो कृषि-आधारित थीं जैसे - शक्कर, गुड, तेल, इत्यादि।
- लेकिन सिर्फ़ मैदानी इलाकों में बसे किसानों की खेती ही ग्रामीण भारत की ख़ासियत नहीं थी।
- कई ऐसे क्षेत्र भी थे जहाँ ज़्यादा उपजाऊ ज़मीनों जैसी खेती नहीं हो सकती थी जैसे-

1. सूखी ज़मीन के विशाल हिस्से
2. पहाड़ियों वाले इलाके

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

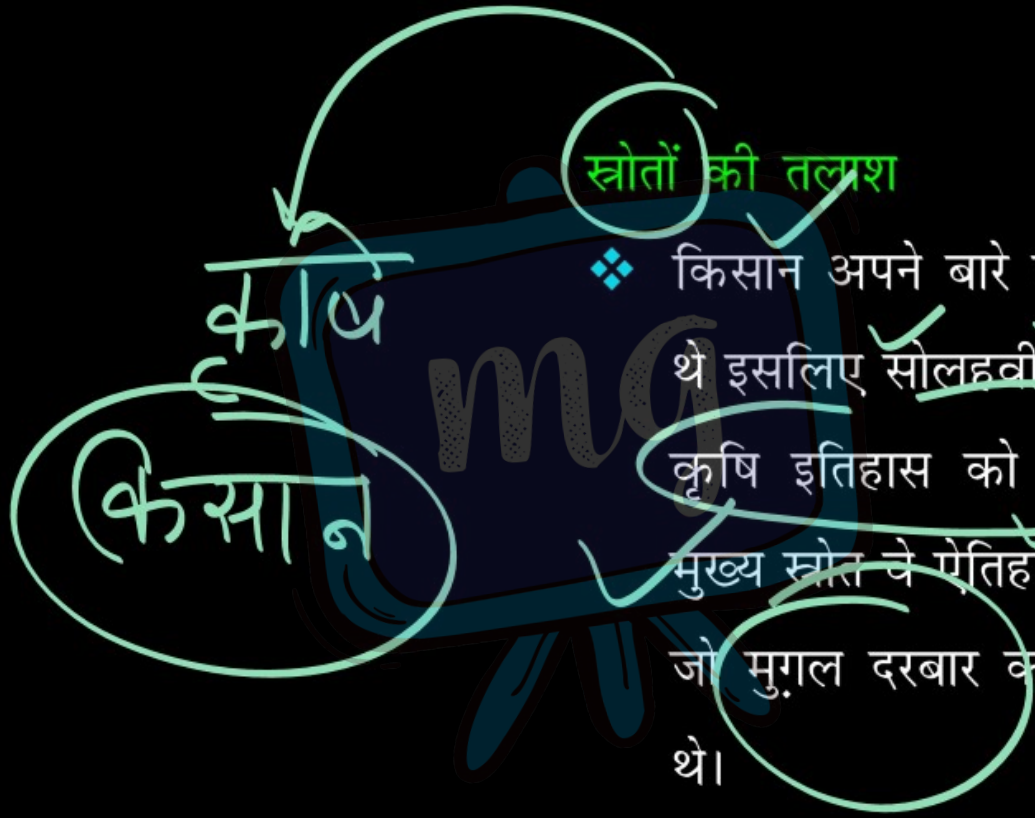

स्रोतों की तलाश

- किसान अपने बारे में खुद नहीं लिखा करते थे इसलिए सोलहवीं और सत्रहवीं सदियों के कृषि इतिहास को समझने के लिए हमारे मुख्य स्रोत वे ऐतिहासिक ग्रंथ व दस्तावेज़ हैं जो मुग़ल दरबार की निगरानी में लिखे गए थे।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- सबसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों में एक था आइन-ए-अकबरी जिसे अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फ़ज़्ल ने लिखा था।
- खेतों की नियमित जुताई की तसल्ली करने के लिए, राज्य के नुमाइंदों द्वारा करों की उगाही के लिए और राज्य व ग्रामीण सत्तापोशों यानी कि ज़मींदारों के बीच के रिश्तों के नियमन के लिए जो इंतज़ाम राज्य ने किए थे, उसका लेखा-जोखा इस ग्रंथ में बड़ी सावधानी से पेश किया गया है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

किसान

- किसानों के बारे में जो कुछ हमें आइन-ए-अकबरी से पता चलता है वह सत्ता के ऊँचे गलियारों का नज़रिया है।
- आइन-ए-अकबरी की जानकारी के साथ-साथ हम उन स्रोतों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं जो मुग़लों की राजधानी से दूर के इलाकों में लिखे गए थे।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इनमें सत्रहवीं व अठारहवीं सदियों के गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान से मिलने वाले वे दस्तावेज़ शामिल हैं जो सरकार की आमदनी की विस्तृत जानकारी देते हैं।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के बहुत सारे दस्तावेज़ भी हैं जो पूर्वी भारत में कृषि-संबंधों का उपयोगी खाका पेश करते हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

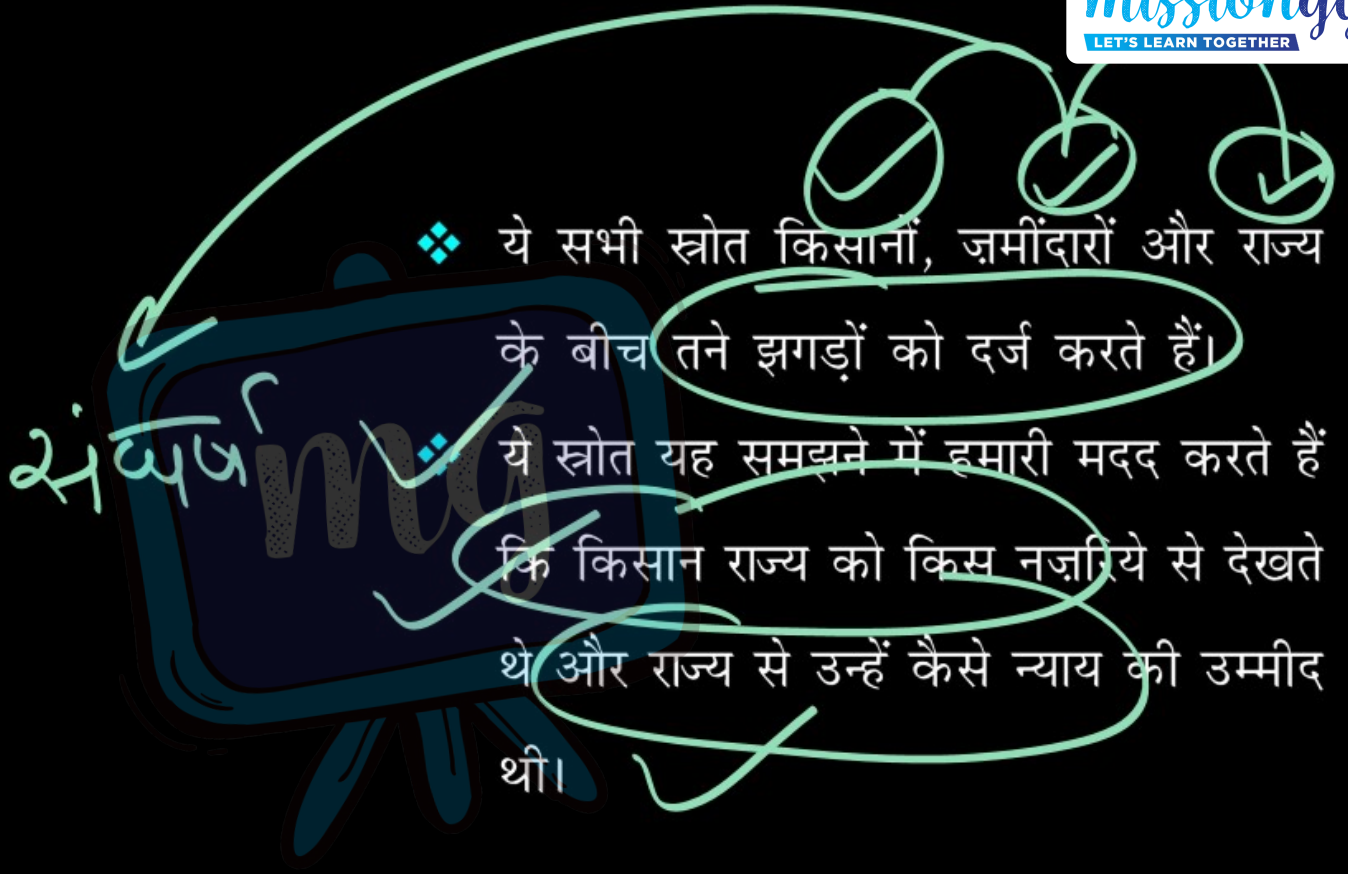

- ये सभी स्रोत किसानों, ज़मींदारों और राज्य के बीच तने झगड़ों को दर्ज करते हैं।
- ये स्रोत यह समझने में हमारी मदद करते हैं कि किसान राज्य को किस नज़रिये से देखते थे और राज्य से उन्हें कैसे न्याय की उम्मीद थी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

स्त्रोत : कृषि

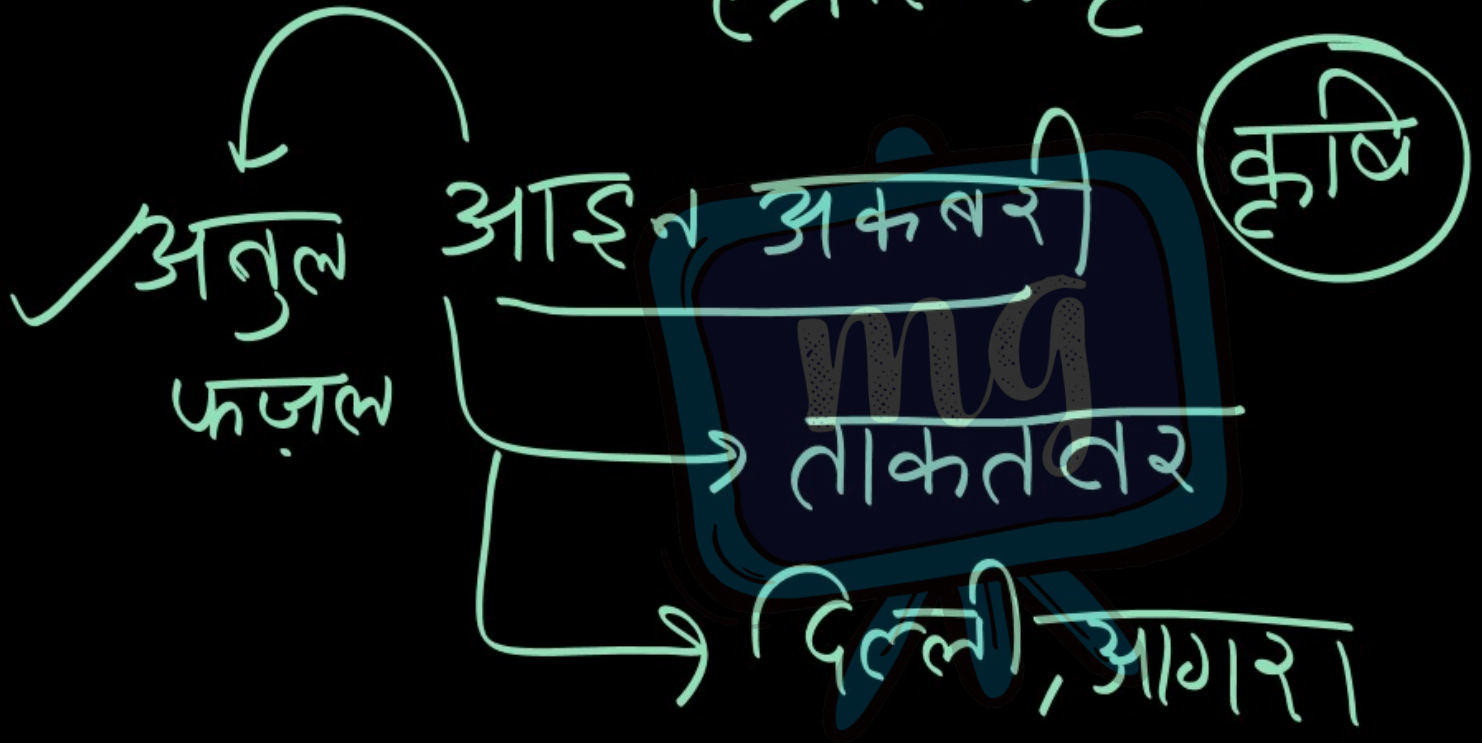

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

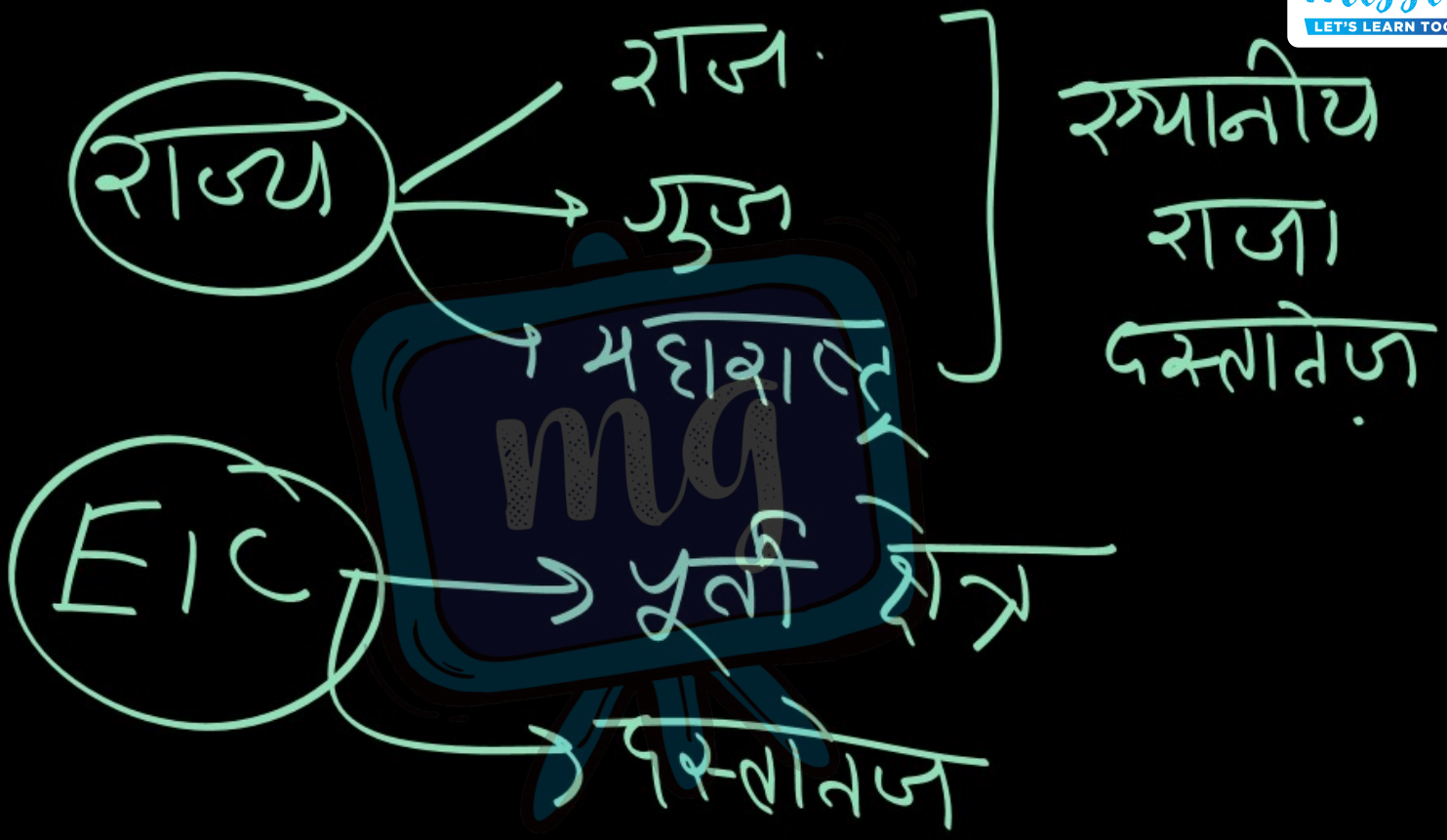

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मध्यकालीन भारत में कृषि के इतिहास के बारे में जानने के स्रोत पर चर्चा करें?



KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

किसान और उनकी ज़मीन

- मुग़ल काल के भारतीय-फ़ारसी स्रोत किसान के लिए आमतौर पर रैयत (बहुवचन, रिआया) या मुज़रियान शब्द का इस्तेमाल करते थे।
- हमें किसान या आसामी जैसे शब्द भी मिलते हैं।

सत्रहवीं सदी के स्रोत दो किस्म के किसानों की चर्चा करते हैं-

- खुद-काश्त
- पाहि-काश्त

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

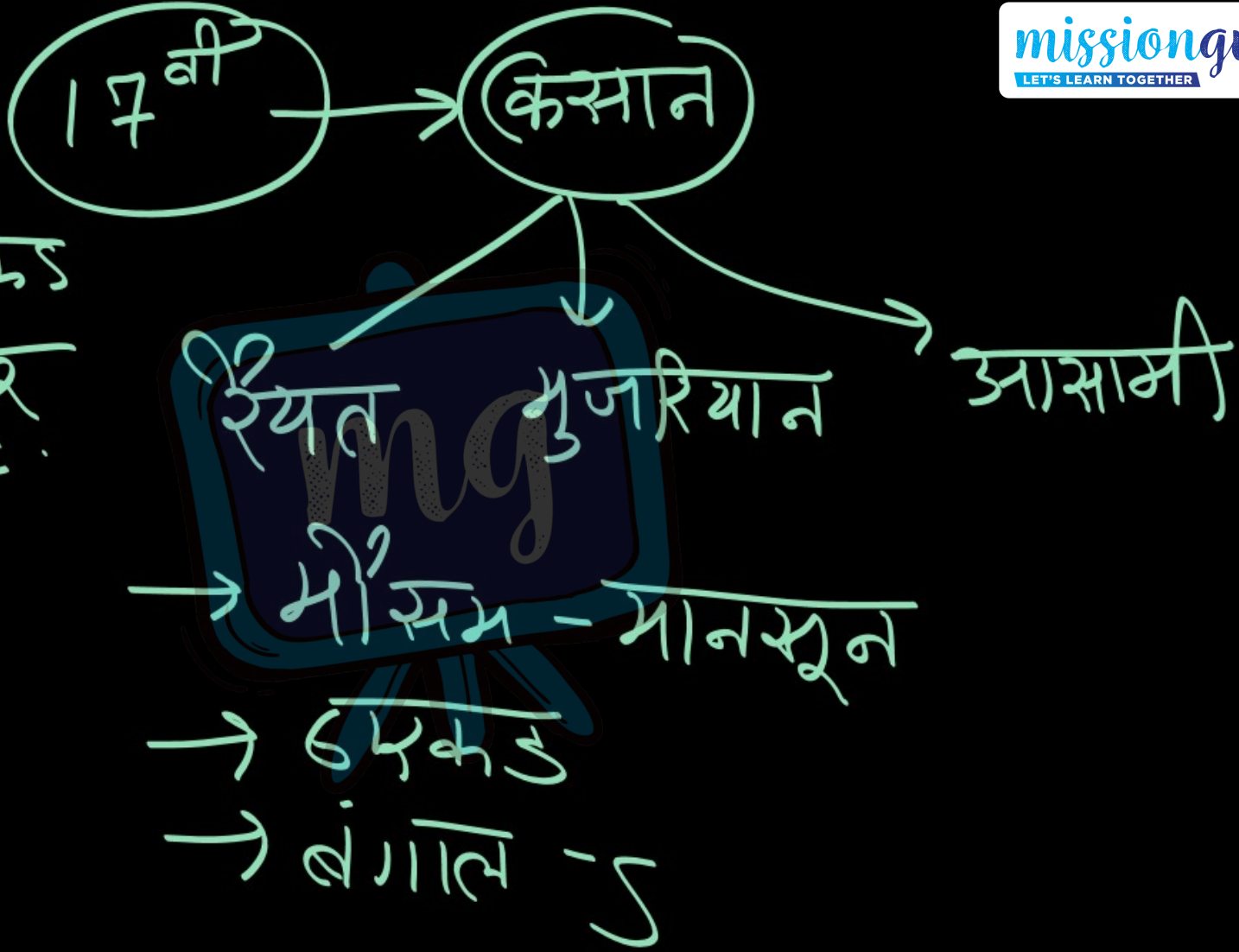

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

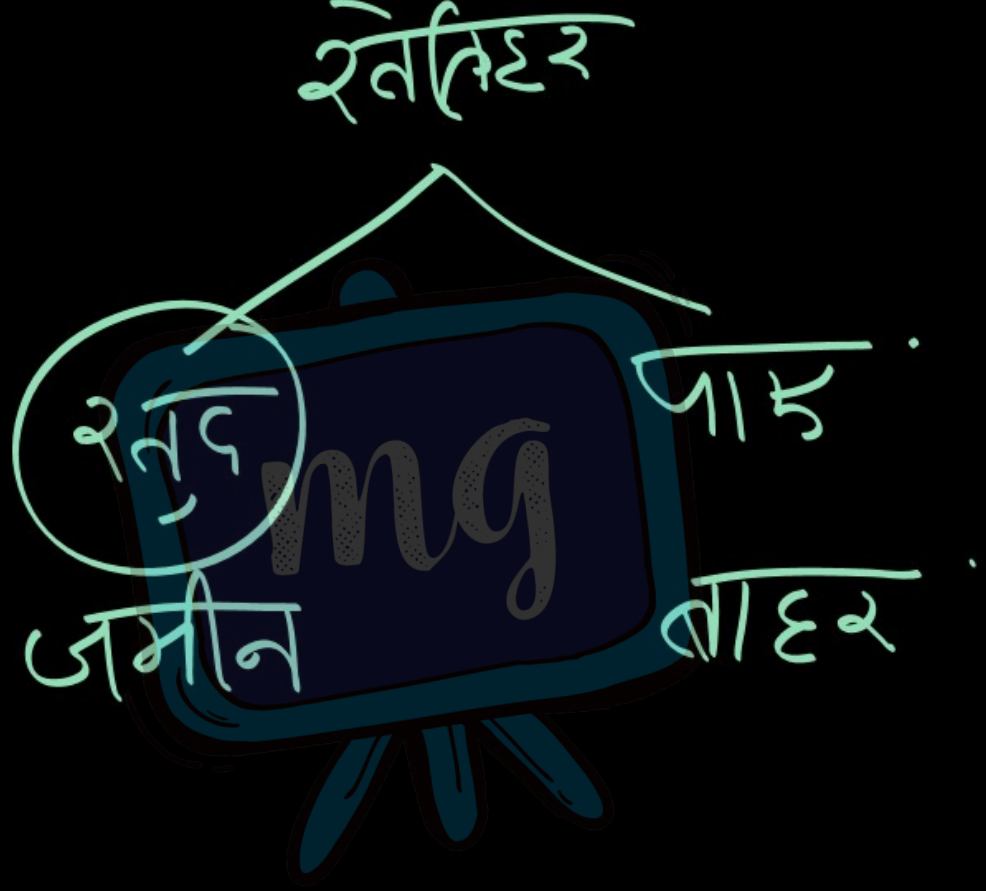

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खुद-काश्त :- पहले किस्म के किसान वे थे जो उन्हीं गाँवों में रहते थे जिनमें उनकी ज़मीन थीं।

पाहि-काश्त :- दूसरे वे खेतिहर थे जो दूसरे गाँवों से ठेके पर खेती करने आते थे। लोग अपनी मज़ी से भी पाहि-काश्त बनते थे।

- उत्तर भारत के एक औसत किसान के पास शायद ही कभी एक जोड़ी बैल और दो हल से ज़्यादा कुछ होता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- गुजरात में जिन किसानों के पास 6 एकड़ के करीब ज़मीन थी वे समृद्ध माने जाते थे।
- बंगाल में एक औसत किसान की ज़मीन की ऊपरी सीमा 5 एकड़ थी।
- 10 एकड़ ज़मीन वाले आसामी को अमीर समझा जाता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सिंचाई और तकनीक

- खेती का प्राथमिक उद्देश्य लोगों का पेट भरना था, इसलिए रोज़मर्रा के खाने की जरूरतें जैसे चावल, गेहूँ, ज्वार इत्यादि फ़सलें सबसे ज़्यादा उगाई जाती थीं।
- जिन इलाकों में प्रति वर्ष 40 इंच या उससे ज़्यादा बारिश होती थी, वहाँ कमोबेश चावल की खेती होती थी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कम और कमतर बारिश वाले इलाकों में क्रमशः गेहूँ व ज्वार-बाजरे की खेती ज़्यादा प्रचलित थी।
- मानसून भारतीय कृषि की रीढ़ था, जैसा कि आज भी है।
- सिंचाई के कृत्रिम उपाय भी किये जाते थे।
- उत्तर भारत में राज्य ने कई नयी नहरें व नाले खुदवाए और कई पुरानी नहरों की मरम्मत करवाई, जैसे कि शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान पंजाब में शाह नहर ।